International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.8 No.5 May – June 2021

परीवार एवं समाज में विधवा महिलाओं की समस्याएँ एवं निदान

डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर, रामेश्वर सिंह ट्रीचर्स कॉलेज

(पांडेय परसावां गया बिहार) (मगध विश्वविद्यालय बोधा गया)

हमारे समाज में विधवाओं के साथ हमेशा से भदभावपूर्ण व्यवहार होता रहा है। वर्ष 2010 के आंकड़ों के मुताबिक भारत में 4.5 करोड़ विधवायें है। इनमें से 4 करोड महिलायें को विधवा पेंशान नही मिल पाती। परंपरा के आधार पर इन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। साथ-ही-साथ परिवार के अंदर उन्हें बोझ समझा जाता है।

हमारे आस-पास के वातावरण में विधवा महिलाओं का सत्य यही है की अधिकांश विधवायें विरासत के अधिकारों से वंचित है और वे यौन शोषण तथा हिंसा की शिकार होती है भारतीय विधवायें अभी भी अतीत के मानदंडों परंपराओं और सांस्कृतिक उपेक्षाओं से पिड़ित है। विधवाओं द्वारा सामना की जाने वाली दो आम समस्याएँ हैः-

1. सामाजिक स्थिती का नुकसान
2. वितीय स्थिरता में कमी है।

प्रायः वह स्त्री जिसके पति की मृत्यू हो गयी हो और जिसने दो बारा विवाह न किया हो उसे विधवा स्त्री कहते है।

यधपि भारत में पारम्परिक रीति से नाना प्रकार के अनुस्ठान करके राशि नाम व कुंडली से गणना करके विवाह किये जाते है फिर भी कई महिलायें अपने यौवन में ही विधवा हो जाती है इसके कई निम्न लिखीत कारण हैः-

1. किसी नाबालिक बालिका का विवाह किसी रिती-रिवाज या अंध-विश्वास के कारण ऐसे उम्रदराज अविवाहित पूरूष या विधूर से हो जाता है जो कुछ वर्षो मे ही मर जाता है।
2. गरीब माँ-बाप अपनी बेटी की शादी करने के लिये मुंहमाग दहेज नहीं दे पाते इसलिये खाना पूर्ति के लिये अपनी तथा कयित इज्जत बचाने के लिये उम्रदराज पूरूष से अपनी बेटी का विवाह कर देते है जो भी कुछ समय में मर जाता है।
3. बाल-विवाह प्रमाण के कारण कच्ची उम्र में विवाह होने पर अस्वस्थता बिमारी के कारण पति मर जाता है।
4. दंगा, डकैती, सामूहिक नरसंहार , या अन्य अपराध के दौरान पति मारा जाता है।
5. किसी प्राकृतिक आपदा तथा बाढ़, भुकम्प, चक्रवात, सुखा, आगलगी, रासायनिक, तासदी आदी के कारण भी पति मारा जाता है।
6. खतरनाक व्यवसाथों प्रक्रियाओं में काम करने वाला पति दूर्घटना में मर जाता है या असाहय बीमारी से ग्रसित होने पर मर जाता है।
7. नौकरी, स्वरोजगार, व्यापार या राजनिती में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त होने पर पहली पत्नी को छोड़कर या उसके मौजुद रहने पर दूसरी कम उम्र की लड़की से बेमेल विवाह कर लिया जाता है और स्वाभाविक रूप से पति की मृत्यू पहले हो जाती है।
8. गरीब परिवारों से पैसेवाले उम्रदराज लोग लड़की को खरीदकर शादी कर लेते है परिणाम स्वरूप उम्र के अंतर के कारण लड़की विधवा हो जाती है इत्यादी।

परिवार में विधवा औरतों की स्थिती:

वहीं दूसरी ओर जहाँ तक परिवार में विधवा औरतों की स्थिती की बात की जाता है वहाँ पर इन्हें कदम-कदम पर कई कुरूतियों तथा अमानवीय दुर्व्यवहार से गुजरना पड़ता है। साथ ही विधवा महिलायें आर्थिक रूप से भी असहाय होती है। हिन्दू समाज में विधवा महिला की स्थिती दयनीय है व

उनका धर्म के नाम पर शोषण किया जाता है। विधवा औरत की यह स्थिती काफी शरणायी यो जैसी होती है। देश के कई शहरों में विधवाओं का आश्रम है, जहाँ निराधित महिलाओं शेष जीवन गुजार रहीं है।

साधारण तथा परिवार वालों को विधवा महिला का किसी पूरूष से बातचीत करना भी पसन्द नहीं होता है। सर्वप्रथम परिवार वाले ही महिला को चरित्रहीन कहने लगते है। कई परिवार वाले महिला को साथी के बिना ही रहने के लिये साहय करते है। यह महिलाओं के जीवन के आधार को संकृयित कर देता है।

एक स्वस्थ और सुखी परिवार के लिये यह जरूरी है कि महिलाओं की सुने, समझे और उनकों आजाद रहने दे। साभी के होने पर महिलाये किस तरह का जीवन जीना चाहती है यह महिलाओं को ही तय करने दे साथ-ही-साथ विधवा महिलाओं के पूर्नविवाह पर भी स्वतंत्र रूप् से विचार की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिये। परम्परागत भारतीय समाज में विधवाओं का पूर्नविवाह अनुचित माना जाता या तथा इस पर पूर्ण प्रतिबंध हुआ करता था। परंतु वर्तमान समय में शिक्षा औधोगी करण एवं नगरीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है तथा विधवा विवाह के प्रति लोगो का सकारात्मक सोच उत्पन्न हो रहा है। यह निम्न तलिका से स्पष्ट होता है:-

विधवाओं के विवाह के प्रति उतरदातियों का दृष्टिकोणः

तालिका-1

दृष्टिकोण	शिक्षित कामकाजी महिलाएँ	शिक्षित गैर कामकाजी महिलाये
हाँ	10 (100.0)	10 (100.0)
नहीं	0	0
योग	10 (100.0)	10 (100.0)

तालिका-2

इस प्रकार तालिका के आंकडो से यह ज्ञात होता है की विधवाओं का पुर्नविवाह होना चहिये। विधवाओं को सम्मान और प्रतिष्ठा की नजर से देखने के प्रति लोगो का दृष्टिकोण-

दृष्टिकोण	शिक्षित कामकाजी महिलाएँ	शिक्षित गैर कामकाजी महिलाये
हाँ	04 (40.0)	03 (30.0)
नहीं	06 (60.0)	07 (70.0)
योग	10 (100.0)	10 (100.0)

अतः तालिका के आँकडों से ज्ञात होता है की विधवाओं को सम्मान और प्रतिष्ठा की नजर से नहीं देखा जाता इस समस्या का समाधान के लिये यह अनिवार्य है की उन्हें सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की जाय।

परिवार एवं समाज में विधवा महिलाओं की समस्याओं के समाधान के उपाय:

1. स्त्री शिक्षा को अनिवार्य किया जाय।
2. लड़की की मर्जी के बगैर शादी पर प्रतिबंध लगाया जाय।
3. तलाक को कानुनी दर्जा दिया जाय।
4. महिलाओं को अपनी मर्जी के अनुसार किसी भी हूनर के लिये ट्रेनिंग दिया जाय।
5. उनके मान-सम्मान पर ध्यान देना चाहिये।
6. समाज में महान एवं विदूषी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहियें।
7. व्यापक कारनों नितियों और पहलों को लागु करना जो लिंग आधारित भदभाव का रोकते हैं।
8. स्त्रियों के लिये समान काम समान वेतन लागु करना।
9. कार्यस्थन में यौन उत्पीड़न जैसे उदेका समाधान करना।
10. महिला सशक्तिकरण की दिशा में आवश्यक कदम उठाना इत्यादी।

निष्कर्ष :

अतः इस प्रकार विधवा महिलाओं को हमारे समाज में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनितिक इत्यादी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार के जीवन से उन्हें वर्तमान में बाहर निकालने एवं सम्मानप्रर्वक जीवन प्रदान करने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिये हमे विधवा पूर्नविवाह परिवार एवं समाज में उनके लिये उन्नत दृष्टिकोण को अपनाकर उन्हें नारी सशक्तिकरण की ओर अगसर करना चाहीये।

सन्दर्भ-सुची:

1. सक्सेना डॉ. शर्मा प्रभाण राधा कमल मुकर्जी-चिन्तन परम्परा महिला उधमियों की पारिपारिक भुमिका जुन 2014
2. बलराम- आजकल जुलाई 2002
3. सरोजनी वि.आर्य - कामकाजी नारी का द्वन्द्ध और कर ययार्य,भाषा नवंबर-दिसंबर 1992
4. संहया गंगराडे- आज की कविता में नारी अस्तित्वा सम्मेलन पत्रिका भाग-90 अंक-4